जापान भारती

अंक ४ विक्रम संवत् २०५२ जून १९९५

इस अंक में

हमारा पन्ना

आपका पन्ना

काव्य धारा

आजकल

परिचय

अनुभव

संस्कृति

बचपन

निवेदन

रम्य रचना

रान्ना

कविता

संपादक

सौरभ सिंघल

संपादक मंडल

अखिल मित्तल

रन्जन गुप्त (रंजन गुप्त)

रंजन कुमार

सुशील कुमार जैन

पता

२०८, मैंशन न्यू ताकानावा

२-१०-१५ ताकानावा

मिनातो कू

तोक्यो १०८

फोन/फैक्स/ई-मेल

सौरभ : ०३-३४६२-०८५३

singals@ml.com

रंजन कुमार : ०३-३४७३-६०४३

ranjan@twics.com

सुशील : ०३-३८३२-१६४१

सांस्कृतिक विकास में भाषा का विशेष महत्व है । चित्रकला, संगीत, रंगमंच, साहित्य, और नृत्य के मोतियों को माला में पिरोने वाला सूत्र भाषा ही होती है। आप्रवासी भारतीयों द्वारा जहाँ भी मातृभाषा के प्रयोग में कमी आई, उनका संपर्क अपने देश, अपनी संस्कृति और अपने मूलस्थान से उतना ही क्षीण होता चला गया । और वे विदेशी ताना-बाना ओढ़ वहीं के रंग में ढल गए । इसके विपरीत, जिन देशों में मातृभाषा को निष्ठापूर्वक सेवा की गई, वहाँ बसे आप्रवासी भारतीयों तथा उनकी पीढ़ियों की विचारधारा में गहरा परिवर्तन नहीं आया - लंदन में भारतीय घरों से रैप सुनाई देता है ; ओटावा के घरों में शंखनाद आज भी गूँजता है।

भाषा का चिंतन से एक सीधा, स्पष्ट संबंध है। एक नवजात शिशु की सोचने की शक्ति केवल उत्तेजनाओं तक ही सीमित होती है - कुछ मास के बाद उसकी कल्पना में बिंब-प्रतिबिंब भी सम्मिलित हो जाते हैं । जैसे-जैसे अनुभव में वृद्धि होती है, शब्दावली बढ़ती है और चिन्तन का विकास होता है ।

जॉर्ज ऑरवेल के प्रसिद्ध उपन्यास '1984' में पुलिस-राज्य हर वर्ष शब्दकोष में से कुछ और ऐसे शब्दों को हटा देता है जिनसे किसी सशक्त राय को व्यक्त किया जा सके । यहाँ तक कि 'हानिकारक' के स्थान पर 'कम लाभदायक' का प्रयोग होने लगता है । परिणामस्वरूप जनता में स्वतंत्र चिंतन-मनन की शक्ति ही नहीं, अपितु इच्छा भी समाप्त हो जाती है । अफ्रीका की कुछ भाषाओं में 'एक', 'दो' के आगे 'तीन', 'चार' की अपेक्षा आता है 'अनेक' । तीन भैंसें भी अनेक हैं और तीन सौ भी । हम-आप शायद हिम, बर्फ, और ओले की श्रेणियों में ही जमे हुए पानी का वर्गीकरण कर पाएँ, किन्तु एस्कीमो भाषाओं में २२ प्रकार के शब्द अलग-अलग प्रकार के हिम का वर्णन करते हैं; हमारे लिए ऐसी कल्पना भी कठिन है - अर्थात् अनुभव, चिंतन, और भाषा एक दूसरे से जुड़े हैं और इनका विकास पारस्परिक रूप से ही संभव है।

अपने प्राचीन ग्रंथों का सार विदेशी भाषाओं के माध्यम से प्राप्त करना शायद सम्भव तो है, पर अनुवाद में इनका मर्म धूमिल हो जाता है । यह भी नकारा नहीं जा सकता कि हर प्रदेश और संस्कृति की नैसर्गिक, आंचलिक विशेषताओं का वर्णन किसी विदेशी भाषा में पूर्ण रूप से नहीं किया जा सकता । पपीहे की कूक, सावन की काली घटा, माँ का आँचल और माँग का सिन्दूर - यह भाव आप अपनी भाषा में ही समझ - समझा सकते हैं ।

हम एक बार फिर दोहराना चाहेंगे कि अपनी जड़ों से जुड़े रहने के लिए अपनी मातृभाषा का प्रयोग नितांत आवश्यक है - मातृभाषाओं में लिखें, बोलें, इन्हें सीखें, और सिखाएं । इन्हें वह सम्मान दें जो इनका अधिकार है, इनके प्रयोग में गौरवान्वित हों ।

जापान भारती के तीसरे अंक पर हमें अनेक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुईं । इससे हमारा उत्साह तो बढ़ा ही है, साथ-साथ आप्रवासी भारतीयों को अपनी मातृभाषा और जन्मभूमि से जोड़ने का हमारा प्रयास भी सार्थक सिद्ध हुआ है ।

सुप्रसिद्ध साहित्यकार हिमांशु जोशी द्वारा हिंदी के विकास के लिए किया गया आजीवन संघर्ष किसी तप से कम नहीं है, और कई अर्थों में हमारी प्रेरणा भी है । जोशी जी का आशीर्वाद-पत्र पा कर हम धन्य हुए।

आपसे अनुरोध है कि अपना समर्थन पत्र-प्रतिक्रियाएँ भेजने तक ही सीमित न रखें - अधिकाधिक रचनाएँ भेज कर जापान भारती के पृष्ठों पर एक सतरंगी आभा बिखेरें ।

- सौरभ सिंघल

प्रिय सौरभ जी,

सादर नमस्कार । मुखट आश्चर्य के साथ भारती का प्रवेशांक एवं अन्य अंक प्राप्त हुए । इस महान कार्य की शुरुआत के लिए आपको एवं अन्य साथियों को हार्दिक बधाई । जापान में आए मुझे लगभग पाँच वर्ष हुए और भारती प्राप्त होने पर मुझे पहली बार यह अनुभूति हुई कि यह पाँच साल मैं ने ऐसे व्यतीत किए जैसे कि अपनी मातृभाषा से कोई संपर्क ही न हो । परंतु अब भारती के माध्यम से अपनी भाषा एवं देश-विदेश में रह रहे भारतीयों से जुड़े रहने की आशा करता हूँ । इस पत्रिका की सफलता एवं प्रगति की कामना करता हूँ ।

- *संजय पांपली*

आदरणीय अखिल जी,

जापान भारती भेजने के लिए धन्यवाद । मैं हिंदी पढ़ने - लिखने में बहुत रुचि रखती हूँ पर इसके लिए अवसर अधिक प्राप्त नहीं होते । शब्दकोष की सहायता से मैंने जापान भारती का तीसरा अंक पढ़ा । आशा करती हूँ कि आप मुझे यह पत्रिका लगातार भेजते रहेंगे । डाक खर्च के लिए २००० येन भेज रही हूँ।

- *अकिको नरिता,*
टोक्यो

आपके सहयोग के लिए हम बहुत आभारी हैं - संपादक

संपादक जी,

नमस्कार,

टोक्यो में भारतीय भाषाओं की पत्रिका का प्रयास अत्याधिक प्रशंसनीय है । शुभ कामनाओं सहित,

- *सुनील जैन,* ताइतो-कू, टोक्यो

आपका पत्र एवं जापान भारती का तीसरा अंक प्राप्त हुआ । पहले दोनों अंक भी मुझे मिले हैं । आपने ऐसा शुभ कदम उठाया है, इसके लिए मेरी हार्दिक बधाई । मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपका यह उत्साहजनक प्रयास अवश्य ही सफल रहेगा। प्रत्येक अंक का बेसब्री से इंतज़ार है । शुभकामनाओं सहित,

- *प्रदीप कुमार सिन्हा*, कावासाकी

जापान भारती का तीसरा अंक हमारे हाथ में है । दूसरे अंक से हम पाठकों को हमारा पत्र भी मिला है, इसकी मुझे बेहद खुशी है । जापान भारती के जरिये हम आम पाठकों तक ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजक रचनायें पहुँचाने के लिए धन्यवाद।

पहले अंक में प्रो. हरजेन्द्र चौधरी की रचना 'आंखों देखी' (सच्ची घटना) काफी रोचक लगी । दूसरे अंक में 'संस्कार' : भारतीय परम्परा का आधुनिक आकलन भी काफी अच्छा है । इस आकलन ने उपन्यास संस्कार को समझना और भी सरल बना दिया है । जापान भारती के अगले अंक का बेसब्री से इंतजार है । शुभकामनाओं सहित,

- *प्रीति सिन्हा,* कावासाकी

प्रिय श्री सिंघल,

जापान भारती के अंक प्राप्त हुए । धन्यवाद ! प्रयास सचमुच प्रशंसनीय है । किसी विशिष्ट सहयोग की अपेक्षा हो तो अवश्य लिखें । आपका,

- *शांतनु भागवत*, द्वितीय सचिव,
भारतीय राजदूतावास, टोक्यो

श्रीमान संपादक महोदय एवं संपादक मंडल के महानुभावगण,

सादर नमस्कार,

आप सभी का यह सराहनीय प्रयास लगातार निखार पर है। कृपया अपने पूर्ण उत्साह और शक्ति से भारतीय समुदाय को जड़ों को सींचते रहें और सांस्कृतिक प्रसाद बाँटते रहें । माँ भारती की सेवा का आप सभी का यह प्रयास सदैव फलता-फूलता रहे इसी आशा और शुभकामनाओं के साथ आपका ही,

नरेश मुकुट सिंह, योकोहामा

प्रिय श्री सारभ सिंघल,

जापान भारती के तीनों अंक पढ़े और मातृभाषा का आनंद लिया । ये अंक पढ़ कर विदेश में रह कर भी

प्रिय सिंघल जी,

आपका पत्र मिला । इससे पूर्व 'जापान भारती' के तीनों अंक भी । धन्यवाद ।

आप्रवासी भारतीयों की अपनी समस्याएँ हैं । अपने देश से जितना दूर जाते हैं, भावात्मक रूप से उतना ही, अपने देश की मिट्टी से जुड़ते चले जाते हैं । और धीरे-धीरे अंत में विदेश की धरती पर मात्र भारतीय न रह कर सम्पूर्ण भारतीयता के संवाहक बन जाते हैं ।

आप लोगों का प्रयास सराहनीय है । भारत में भले ही अभी तक हिन्दी को वह प्रतिष्ठा नहीं मिल पाई जो इसका अधिकार है, परन्तु विदेशों में आप इसे जिस तरह से गौरवान्वित कर रहे हैं, उसकी सराहना किन शब्दों में करूँ ।

आपको तथा आपके सहयोगियों को मेरी हार्दिक मंगलकामनाएँ । अपने प्रयत्नों में आप को पूरी-पूरी सफलता मिले । हाँ, कभी समय मिले तो प्रयास कीजिए कि भारतीय वाङ्मय का जापानी में थोड़ा बहुत अनुवाद हो। इससे जापान के प्रबुद्ध पाठकों को समृद्ध भारतीय साहित्य की बानगी मिलेगी ।

शीघ्र ही कोई रचना भेजूँगा । मिवाको की रचनाएँ रोचक रहती हैं । जापान में हिंदी की गतिविधियों के विषय में भी पत्रिका के माध्यम से अवगत कराते रहें ।

शेष फिर,
सस्नेह, हिमांशु जोशी

स्वदेश का सा आभास हुआ। आशा ही नहीं बल्कि विश्वास भी है कि जापान भारती दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की करेगी। हमारी हार्दिक शुभकामनाएं आपके साथ हैं। जापान भारती का शुभचिन्तक,

- डॉ. ब्रह्मपाल सिंह,
अध्यक्ष, भारत-जापान मैत्री मंडल, नागोया

प्रिय सौरभ,

जापान भारती का तीसरा अंक आज प्राप्त हुआ और मैं सीधा तुम्हें पत्र लिखने बैठ गया। यदि किसी भी रूप में जापान भारती की सेवा कर पाया तो यह मेरा सौभाग्य होगा। शुभकामनाओं सहित,

- नरेन्द्र मोहन, नाक्या

कुछ दिनों पूर्व जापान भारती का तीसरा अंक मिला। विदेश यात्रा के कारण आपको पत्र लिखने में विलम्ब हुआ। जापान भारती के प्रकाशन में बहुत परिश्रम करना पड़ता होगा - आपका प्रयास वास्तव में वंदनीय है। मैं मूलरूप से आन्ध्रप्रदेश वासी हूँ। तेलुगू मेरी मातृभाषा है। विद्यालय में मैंने हिन्दी सीखी और चार वर्ष देहरादून स्थित रक्षा अनुसंधान संस्थान में कार्यरत रहा। मैं हिन्दी पढ़-लिख सकता हूँ, पर कुशलतापूर्वक नहीं। जापान भारती के माध्यम से मैं हिन्दी भाषा से एक बार फिर से जुड़ गया हूँ। कृपया मुझे जापान भारती नियमित रूप से भेजते रहें। धन्यवाद,

- डॉ. रंगराज मधुभाषी,
ऑप्टिकल इलेक्ट्रॉनिक अनुसंधान केंद्र,
एन.ई.सी., कावासाकी

प्रिय सौरभ,

जापान भारती प्राप्त कर बहुत सुखद आश्चर्य का अनुभव हुआ। प्रकाशित लेख प्रभावी स्तर के हैं। अपने देश से इतने समय तक इतनी दूर रहने के बावजूद मातृभाषा के प्रति तुम्हारा प्रेम और सेवाभाव अत्यधिक प्रशंसनीय है।

- राजवी, डांग कांग

मैं

मैं ही अपना कर्त्ता हूँ
मैं ही अपना कारक हूँ
फिर भी क्यों मैं डरता हूँ ?
जब मुझसे ही मेरा भविष्य बने
फिर क्यों भविष्य के लिए इतना
जिज्ञासु हूँ ?
जब मैं ही अपना कर्म निर्धारक हूँ
तो क्यों इंतजार है मुझे परिणामों का
जब ज्ञात है मुझे कर्मों की परिणति
फिर किसी को क्यों मैं ध्याता हूँ ?
जब सब कुछ मुझ ही में छिपा
मैं 'पर' में क्यों तलाशता हूँ ?

-सुमेद

सुर

कुहूक बनी, कोयल के उर में
प्रिय तुम, मेरे प्राणों के सुर में
यह मेरे, निःश्वासों का चुंबन
प्रिय तुम, मेरे प्राणों का आलिंगन ।

चांद तारे हैं, हमको दुआ देते हैं
फूल न्यारे हैं - हमको हंसा देते हैं
लेकिन वे जो, हम पर खफ़ा होते हैं
हम जो, हारे हैं, दिल को रुला देते हैं ।

- सुशीला कांकरिया

'आप्रवासी टाइम्स'

१८ मई को दिल्ली में ओस्लो (नॉर्वे) से प्रकाशित हिन्दी समाचार-पत्र - 'आप्रवासी टाइम्स' की पहली प्रति राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा को भेंट की गई। इस अवसर पर बर्मा के पूर्व प्रधानमंत्री श्री ऊ-नू की सुपुत्री मेडम तान-तान नू, सांसद शंकर दयाल सिंह, तथा प्रख्यात साहित्यकार हिमांशु जोशी भी उपस्थित थे।

पत्र के मुख्य संपादक, नॉर्वे निवासी अमित जोशी ने बतलाया कि नॉर्वे से प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'शांतिदूत' के पश्चात उनके संस्थान का यह दूसरा प्रयास है। इस पत्र का उद्देश्य यूरोपीय देशों के आप्रवासी भारतीयों को मात्र एक मंच देना ही नहीं, उन्हें हिन्दी के माध्यम से भारत तथा भारतीयता से जोड़े रखने का भी है।

राष्ट्रपति ने अपने आशीर्वचनों में इन प्रयत्नों की सराहना की और कहा कि विदेशी धरती से उभरता हिन्दी का यह स्वरूप अनुकरणीय है। 'शांतिदूत' इस समय संसार के १५६ देशों में पढ़ी जा रही है। अमित जोशी का संस्थान अनेक भारतीय गौरव-ग्रंथों को नॉर्वेजियन में अनूदित कर उनके प्रकाशन की योजना भी बना रहा है। आशा है रामायण का अनुवाद शीघ्र ही नॉर्वेजियन पाठकों के लिए उपलब्ध हो जाएगा।

समंदर का सपना

ज्वार नहीं था वह
सपना था समंदर का
ज्वार नहीं उतरा
सपना टूटा है ...

प्रो. हरजेन्द्र चौधरी

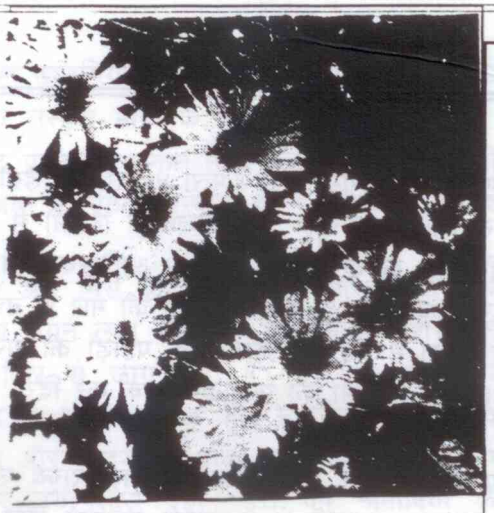

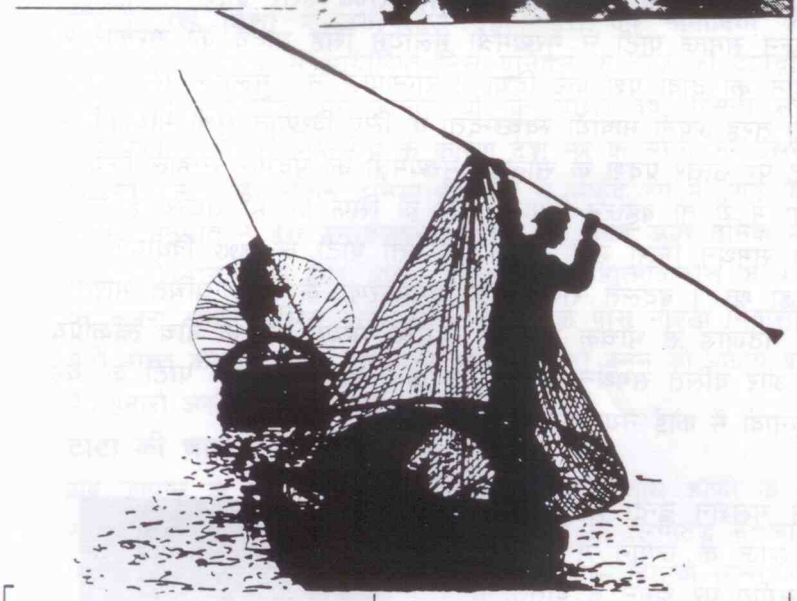

भारती के पन्नों पर पहली बार मराठी की प्रस्तुति है जानी-मानी लेखिका पुष्पा मेढेकर की कलम से दो प्रेमगीत :-

म्हणू नकोस 'जा '

म्हणू नकोस 'जा', अता कुठे वळायचे गडे ?
वळु   नकोस जागता मनात चन्द्र - केवडे
कमळ गुंफ एकदा रेशमी करातुनी
जवळ येऊ दे मृगास रिमझिमुनी मंचकी
उमल एकदा तरी स्वप्नवेष घालुनी
उजळ स्वप्नमलिका स्पर्शवेध घेऊनी
म्हणू नको 'अखेरचे' , अंत या कधी नसे
गगन नित्य शोधते अशी पहाट तू सये
उधळ तो मधाळसा कोष लपविलास जो
उभव चेतनेतले कळस आणि गोपुरे
बरसू दे समेवरी पदमपुष्प रेखू दे
उत्सवाविना कशी निरविशी देवतेस ?

भेंट

तो उन्हात येऊन गेला ग
मज दंवात सोडुन गेला
ती वेळ घाइची होती
किती नजरा अवती भवती
तो गुंजत गुंजत आला ग
मज पतंग बनवुन गेला
दारावर पडदा झुलता लाजेचा प्रहरही चढता
तो रंगत रंगत आला ग मज रंगित बनवुन गेला

पुष्पा मेढेकर, ३०१ देवदीप, कोवला राबडी, ठाणे, महाराष्ट्र

तूफान

तूफान आया था
तूफान आएगा
तूफान तो स्वभाव है समंदर
का
हम गरीबों के पास
चापू न हों
तो भी खे ले जाते हैं हम
अपनी नावें उम्मीदों के सहारे
तूफान में
चापुओं से ज्यादा जरूरी हैं
उम्मीदें ...

प्रो. हरजेन्द्र चौधरी

श्रमिक का श्रम-बिन्दु

श्रमिक का श्रम-बिन्दु
ले कर कुछ धूल कण
अभिषेक कर गया
मेरे राजसी वस्त्रों का
इत्र में सराबोर
मेरे वस्त्र ये सब
कैसे सह सकते थे ?
प्रश्न उठ गया था
मान-प्रतिष्ठा का

ज्ञान प्रकाश शर्मा

तपती गर्मी - भीषण आग

भारत के विभिन्न हिस्सों ने इस बार भीषण झुलसाती गर्मी झेली। पारा ४५ से ५० डिग्री को भी पार कर गया। तपते सूरज और लू के थपेड़ों ने ५०० से अधिक जानें ले लीं। राजधानी दिल्ली में जलसंकट की आशंका हरियाणा और दिल्ली की राजनीतिक खींचतान के बीच उलझ गई । आखिरकार मामला सुलझ गया और हरियाणा ने दिल्ली को अतिरिक्त पानी देना कबूल कर ही लिया । गर्मी की मार से बचने के लिए कुछ लोगों ने हिमाचल में कुल्लू–मनाली तथा उत्तर प्रदेश में गढ़वाल–कुमाऊँ के पहाड़ों की शरण ली । पर इस गर्मी के ताप से भीषण आग ने इन पहाड़ों के हरे–भरे जंगलों को जलाकर खाक कर दिया ।

नई सरकार - नए समीकरण

इस तपते माहौल में जून का महीना भारत के सबसे अधिक आबादी वाले राज्य उत्तर प्रदेश में नाटकीय राजनीतिक परिवर्तन लेकर आया । बहुजन समाज पार्टी ने मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव की सरकार से समर्थन वापस लेकर स्वयं सरकार बनाने का दावा पेश कर दिया । राज्यपाल ने मुलायम सिंह यादव सरकार को बर्खास्त कर दिया । और इस तरह अपनी भाषायी स्वच्छन्दता के लिए विख्यात सुश्री मायावती ने शनिवार ३ जून रात ११ बजकर १० मिनट पर उत्तर प्रदेश के सोलहवें मुख्यमंत्री का पदभार सम्हाल लिया । ४२५ सदस्यों की उत्तर प्रदेश विधानसभा में यूँ तो बहुजन समाज पार्टी के सिर्फ ६६ ही सदस्य हैं किन्तु सरकार बनाने के लिए उसे अप्रत्याशित समर्थन मिला उसी भारतीय जनता पार्टी के १७७ विधायकों का जिससे कल तक उसका ३६ का आँकड़ा था । बदलते राजनीतिक समीकरणों के लिए चर्चित भारतीय राजनीति भी इस नितांत विपरीत ध्रुवीय गठजोड़ से भौंचक रह गई । उच्च–मध्यम वर्ग के बीच लोकप्रिय समझी जाने वाली भारतीय जनता पार्टी और दलित समर्थन के बूते पर खड़ी बहुजन समाज पार्टी का यह साथ अप्रैल १९९६ में निर्धारित संसदीय चुनावों में कोई नया गुल खिला सकता है ।

सत्रहवाँ साल और ऐसा कमाल

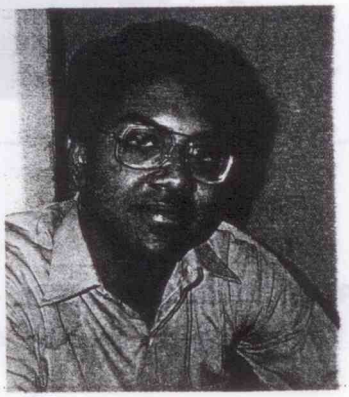

सोलह-सत्रह की उम्र तो एक जमाने में गुलशन नन्दा या कुशवाहा कान्त के रोमानी उपन्यास पढ़ने और आज के जमाने में माइकल जैकसन या बाबा सहगल के धमधमाते संगीत पर झूमने में बीतती है न। ऐसी कमसिन उम्र में भला कोई डॉक्टर बन जाए तो कमाल ही तो कहा जाएगा ! यह कमाल कर दिखाया है अमरीका में बसे भारतीय छात्र बालमुरली कृष्ण अम्बाती ने। न्यूयॉर्क में माउन्ट सिनाई स्कूल ऑफ मेडिसिन से १७ बरस की उम्र में एम॰ डी॰ की डिग्री लेकर बाला ने सात बरस की उम्र का अपना संकल्प पूरा कर लिया। विश्व में सबसे कम उम्र का यह एम॰ डी॰ भविष्य में न जाने और कितने कीर्तिमान स्थापित करेगा।

श्रीवाणी सम्मान

भारतीय दर्शन–परम्परा और संस्कृत भाषा के उद्भट विद्वान प्रो॰ एन॰ एस॰ रामानुज तातार्चार्य को उनके समग्र कृतित्व के लिए प्रथम रामकृष्ण डालमिया श्रीवाणी सम्मान से अलंकृत किया गया।

१५ अप्रैल १९२८ को तमिलनाडु के नावल्पाक्कम् गाँव में संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित कृष्णस्वामी तातार्चार्य के घर जन्मे रामानुज तातार्चार्य ने भी अपने पिता की तरह कृष्णयजुर्वेद तथा व्याकरण, न्याय, वेदान्त और मीमांसा आदि शास्त्रों का गहन अध्ययन किया । अनेक सम्मानों से अलंकृत प्रो॰ तातार्चार्य ने न्यायदर्शन से सम्बद्ध अनेक ग्रन्थों की व्याख्याएँ प्राचीन पद्धति के आधार पर की हैं । भारत के सुप्रसिद्ध

उद्योगपति स्व. रामकृष्ण डालमिया की स्मृति में स्थापित रामकृष्ण डालमिया श्रीवाणी न्यास द्वारा संचालित यह सम्मान देश-विदेश के संस्कृत भाषा के किसी भी जीवित विद्वान को प्रदान किया जा सकता है । टोक्यो विश्वविद्यालय में मानद प्राफेसर संस्कृत विद्वान डॉ. मिनारू हारा भी, भारत के भूतपूर्व प्रधान न्यायाधीश वाई. वी. चन्द्रचूड़ की अध्यक्षता में गठित पुरस्कार चयन समिति के परामर्शमण्डल के सम्मानित सदस्य हैं ।

धूम भारतीय सौंदर्य की

१९९४ में मिस युनिवर्स और मिस वर्ल्ड के खिताब भारतीय सुंदरियों ने क्या जीत लिए ऐसा लगने लगा कि भारत में आम्रपाली और रानी पद्मिनी का सौंदर्य फिर से जाग उठा है। देश भर में सौंदर्य प्रतियोगिताओं की बाढ़ आ गई । लेकिन कुछ सुंदरियाँ विश्व में एक बार फिर भारतीय मेधा और सौंदर्य की धाक जमाने का संकल्प लिए निरंतर उस दिशा में प्रयत्नशील रहीं। इस वर्ष नामीबिया की राजधानी विण्डहॉक में आयोजित मिस युनिवर्स के ताज की दावेदार भारत सुंदरी मनप्रीत ब्रार जानती थी कि पिछले वर्ष सुष्मिता सेन और ऐश्वर्य राय की सफलता के कारण देश भर के लोगों को उससे कितनी उम्मीदें हैं लेकिन दुनिया को एक से सफेद रंग में रंगने की इच्छुक मनप्रीत ने इस मनोवैज्ञानिक दबाव को अपने ऊपर तनिक भी हावी नहीं होने दिया और अपनी सरलता तथा आत्मविश्वास के बल पर दूसरा स्थान हासिल कर लिया। दिल्ली के पास नोएडा निवासी ब्रिगेडियर एस. एस. ब्रार की यह नॅझली बेटी भारत की महिलाओं को पत्नी, माँ और बेटी बनने की बजाय बेहतर व्यक्ति बनने का विकल्प देना चाहती है। हमारी असीम शुभकामनाएँ।

टाटा की चाय - हिताची लाए

अब जापान के चाय कॉफी प्रेमियों को भारतीय चाय कॉफी के लिए भारत नहीं जाना पड़ेगा। १८६८ में स्थापित टाटा उद्योग समूह की कम्पनी टाटा टी लिमिटेड ने जापान की मशहूर हिताची कम्पनी के साथ मिलकर टोक्यो में नई कम्पनी खोली है – टाटा– हिताची सेल्स(जापान) लिमिटेड। पाँच करोड़ येन की पूंजी वाली इस कम्पनी में ५१ प्रतिशत निवेश टाटा टी का है। नई संयुक्त कंपनी पहले वर्ष के दौरान जापान में दो हजार टन कॉफी बेचने की इच्छुक है। वैसे यह प्रयास भारत और जापान के दो प्रतिष्ठित औद्योगिक घरानों के बीच सहयोग और साझेदारी की शुरुआत भर है। सपना तो भविष्य में जापान और भारत के बीच व्यावसायिक सेतु बनने का है।

सुर जो सो गए

१९९५ के इस साल में मौत ने भारतीय साहित्य का घर देख लिया लगता है । २९ मार्च की शाम भारतीय पत्रकारिता और साहित्य के एक महारथी **हरीन्द्र दवे** के हाथ शब्दों को ताकत देते-देते अचानक स्वयं बेजान हो गए। लेकिन मौत भले ही **हरीन्द्र दवे** को अपने साथ ले गई हो उनके पीछे छूट गया है शब्दों का एक भरा-पूरा थरथराता संसार। जिसके बारे में शायद उन्हें भी कुछ नहीं होगा मालूम । **हरीन्द्र दवे** ने स्वयं ही कहीं लिखा था –अपनों की चुप से सारा माहौल भंग है, क्या मैंने कुछ बोल दिया है और मुझे मालूम नहीं ।

फिर पहली जून को जाने माने गीतकार और नवगीत विधा के एक प्रवर्तक **वीरेन्द्र मिश्र** चल बसे। ९ दिसम्बर १९२७ को मुरैना में जन्मे **वीरेन्द्र मिश्र** ने ६८ वर्ष के जीवन में कोई ढाई हज़ार गीत लिखे। ***गीतम*** से लेकर ***अंतरों के अंतराल*** तक उनके चौबीस गीत संग्रहों के हर गीत का सुर कुछ निराला है। **वीरेन्द्र मिश्र** के इस तरह अचानक चले जाने से हिन्दी गीत विधा का एक और सुरीला सुर मौन हो गया।

यह **गूँज** है श्री बिशन शर्मा की कूची से निकले शब्दों की । १९४८ में जन्मे बिशन जी ने अपनी जापानी पत्र-मित्र से ही विवाह किया और १९७६ में जापान आ गए । तब से कोच्ची नगर में अपनी तीन बेटियों और एक बेटे के साथ रहते हैं । स्कूलों में अंग्रेजी अध्यापन के साथ-साथ, बिशन जी सोरोबान ओर जापानी सुलेख कला - शोदो - में पूरी तरह प्रवीण हैं । शोदो का चाव १९८२ में ऐसा लगा कि आज तक न छूटा । बिशन जी शोदो के माध्यम से न सिर्फ कांजी बल्कि देवनागरी लिपि के शब्दों को भी नए अर्थ दे रहे हैं । जापान में आयोजित शायद ही कोई ऐसी शोदो प्रदर्शनी होगी जिसमें बिशन जी की कलाकृतियाँ प्रदर्शित-पुरस्कृत न हुई हों। ११ जून से १३ अगस्त तक कोच्ची में चल रही अखिल जापान शोदो प्रदर्शनी में भी उनकी कला प्रदर्शित है। शोदो को देवनागरी एवम् अन्य लिपियों में लोकप्रिय करने का सपना संजोए बिशन जी अपनी कला साधना में तल्लीन हैं । प्रस्तुत है जापान भारती के लिए उनकी विशेष भेंट :-

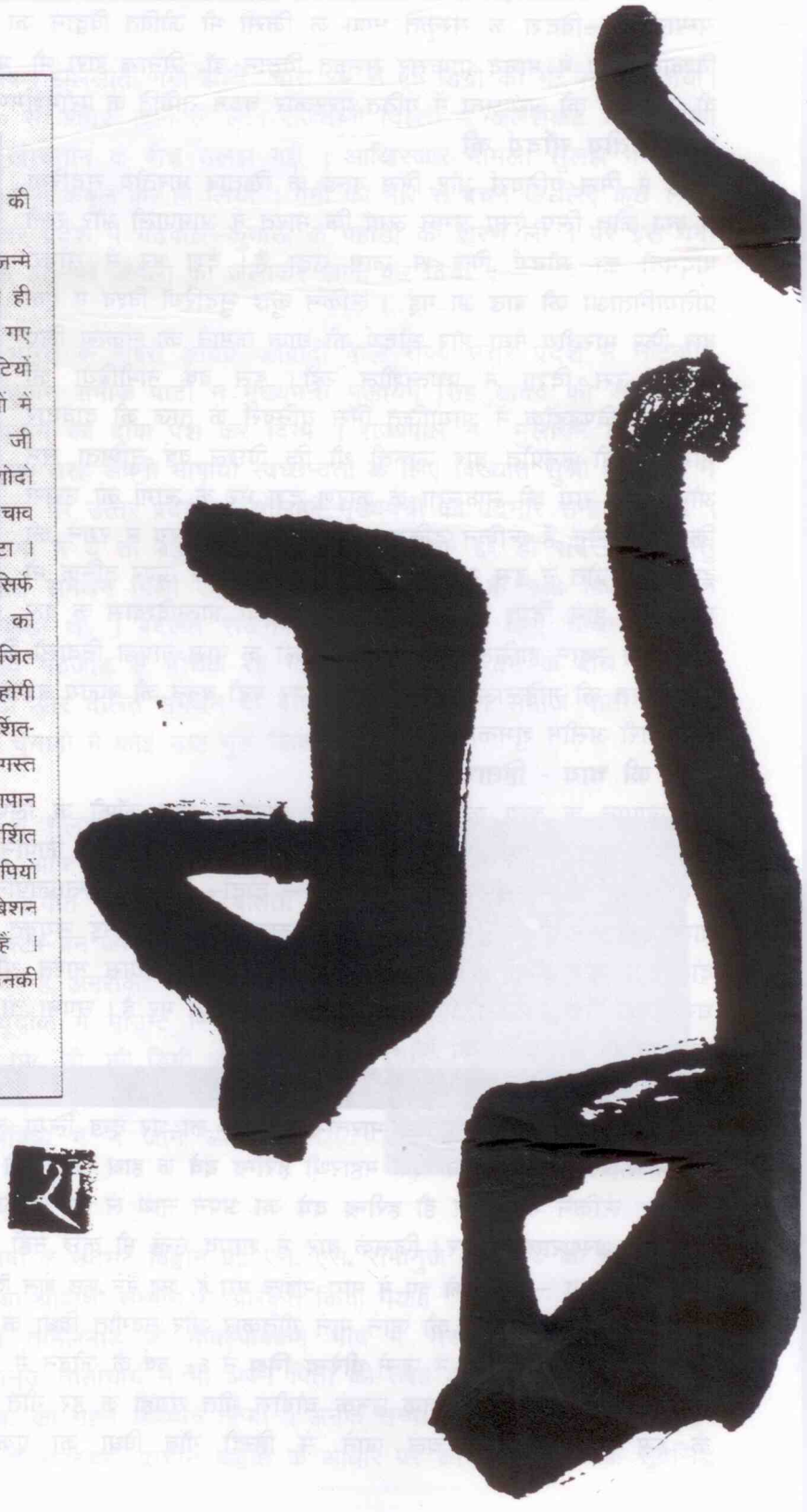

मृत्यु के बाद

- मिवाको कोएज़ुका -

जापान में अधिकांश अंत्येष्टियों में बौद्ध पुजारियों की भूमिका रहती है और सौ से जरा कम प्रतिशत संख्या में दाह-संस्कार सम्पन्न किया जाता है । दाह संस्कार के बाद अस्थि-कलश को कब्रिस्तान में पत्थरों के बने भीतरी कक्ष में सुरक्षित रखा जाता है । पिछले दशकों में ज़मीन की कमी के कारण धार्मिक संस्थानों द्वारा निर्मित इमारतों के भीतर अलमारीनुमा सामूहिक कब्रों वाली जगह पर ये अस्थि-कलश रखना भी होता चला आ रहा है ।

बौद्ध धर्म में या हिन्दू धर्म में पुनर्जन्म वाली बात होती है । अधिकांश जापानी भी मन में इतना तो सोचते हैं कि हम मृत्यु के बाद उस लोक में या स्वर्ग में पहुँच जाएंगे । या वे यह कहेंगे कि हम फिर इस लोक में जन्म लेंगे ।

कुछ ऐसा प्रश्न किया जाता है कि आप अगले जन्म में फिर से स्त्री रूप में या पुरुष रूप में जन्म लेना चाहेंगा या नहीं ? ऐसा भी कभी-कभी पूछा जाता है कि अगले जन्म में आप क्या बनना चाहेंगे ? और लोग, कोई न कोई उत्तर अवश्य देंगे । हाँ, यह सुना जा सकता है कि हम से उत्तर देते नहीं बनता । तो भी कोई स्पष्ट शब्दों में यह नहीं कहेगा कि हम पुनर्जन्म में विश्वास नहीं करते ।

द्वितीय विश्व-युद्ध में सैनिकों के शहीद होने पर उनके परिवार को या तो अस्थि-कलश वाला सफेद कपड़े में बंधा बक्सा या खाली कलश वाली, वैसी ही तैयार पोटली पहुँचाई जाती थी । शहीदों के संबंध में एक भूतपूर्व सैनिक का संस्मरण पढ़ने को मिला था । उनके साथी कहा करते थे कि हमारे घर वाला कब्रिस्तान बिल्कुल नदी के पास में है । जाड़े में वहाँ पर कड़ाके की सर्दी होती है । शायद उन साथी को सर्दी से शिकायत रही हो, ठंडी जगह पर चिर-निद्रा में सोना शायद उन्हें पसंद नहीं आ रहा था ।

आज ऐसी विवाहिताएँ हैं जो तलाक तो नहीं माँगेंगी मगर कहती हैं कि हम मरने के बाद पति की या पति के परिवार वाली कब्र में नहीं समाना चाहेंगी। इसी विवाह में हम पत्नी की भूमिका निभाएँगी । मगर उस लोक में हम अपने पति की सेवा में रहने पसंद नहीं करेंगी । और वे अलग कब्रिस्तान में अपनी ही कब्र बनाने की योजना बना रही हैं । ऐसी भी स्त्रियाँ हैं जो अपने मायके वाले कब्रिस्तान में अपनी जगह सुरक्षित करने के लिए मायके वालों को राजी करा रही हैं ।

सन् १६०० में मध्यवर्ती पहाड़ी जापान में सेकिगाहारा में हुए निर्णायक युद्ध की भीषण लड़ाई में उकिता हिदेइए नामक योद्धा को करारी मात के बाद काले पानी की सजा हुई थी । उसका हचीजोजिमा द्वीप में सजा भोगते हुए देहांत हो गया । उसे वहीं दफनाया गया, कब्र बनाई गई । दूसरी ओर उसकी पत्नी को उसकी मृत्यु पर उसके मायके वालों के यहाँ दफनाया गया क्योंकि तोकुगावा सामंती सरकार में राजा पिता को उच्च स्थान प्राप्त था। गोहिमे नामक इस राजकुमारी जी की कब्र कानाज़ावा शहर में दाइरेनजी नामक मंदिर में है । इस मंदिर के युवा पुजारी के आह्वान पर दोनों की आत्माओं को शांत करने के लिए हाल में ही स्तूपनुमा स्मारक खड़ा किया गया । और उसका, पूजा-पाठ के साथ जल्दी ही उद्घाटन समारोह सम्पन्न किया गया । हज़ार मील दूर रही दोनों की आत्मा कोई साढ़े तीन सौ वर्षों के बाद फिर से साथ हो गई । समारोह में भाग लेने के बाद उनके वंशजों ने कहा कि अलग अलग किए गए दुःखी दम्पत्ति की बिछुड़ी हुई आत्माओं को अब स्थायी शांति मिल रही होगी।

चीन में भारतीय नृत्य

चीनी जीवन पर बौद्ध धर्म के अतिरिक्त भारतीय संगीत, नृत्य, स्थापत्य आदि विभिन्न कलाओं का भरपूर प्रभाव पड़ा है। सुई राजवंश के संस्थापक वेनती (५८१ ई०) के समय में रची गई कृति 'संगीत की सात पुस्तकें' के सात अनुभागों में से एक पूरा अनुभाग भारतीय संगीत तथा नृत्य से संबद्ध है। ताए (६०५–६१६ई०) के समय की पुस्तक 'संगीत की नौ पुस्तकें' में भी भारतीय संगीत तथा नृत्य संबंधी विस्तृत विवरण हैं। इस पुस्तक से यह भी पता चलता है कि भारतीय नृत्य राजदरबार में ही नहीं अपितु जनसाधारण में भी लोकप्रिय था। स्वेह राजवंश की संगीत तथा नृत्य परंपरा थाङ काल में आ कर अभूतपूर्व उत्कर्ष को प्राप्त हुई।

चीनी शासक प्रति वर्ष विदेशी संगीत मण्डलियों को निमंत्रित किया करते थे। इनमें भारतीयों को विशेष महत्व दिया जाता था। भारतीय संगीत के मण्डली के साथ एक छोटी सी नृत्य मण्डली भी हुआ करती थी। थाङ वंश के इतिहास–ग्रंथ भी यह बताते हैं कि भारतीय वाद्यमण्डली के साथ नृत्य मण्डली भी हुआ करती थी। आठवीं शताब्दी में हुए थाङ राजवंश के सम्राट मिङ–ह्वाङ के समय में भारतीय संगीत–नृत्य के कार्यक्रमों को 'ब्राह्मण संगीत' के नाम से पुकारा जाता था।

चौथी शताब्दी से ग्यारहवीं शताब्दी के मध्य तक निर्मित तुनह्वांग की मोकाओ गुफाओं के भित्तिचित्र भी यह प्रमाणित करते हैं कि चीनी समाज भारतीय नृत्यकला से परिचित एवम् प्रभावित था। चीन में समय–समय पर भारतीय नृत्य मण्डलियों के आने की जो परंपरा सुई तथा थाङ वंश के शासन काल के समय में प्रचलित थी वह आधुनिक युग में भी बराबर बनी रही। सन् १९५७ में श्री उदयशंकर अपना दल ले कर आए थे। सन् १९६४ में चीन में हुए भारत महोत्सव के अवसर पर भारतीय लोक नृत्यों की एक मण्डली आई थी। इस नृत्यमण्डली ने जो लोकनृत्य प्रस्तुत किए उनमें भांगड़ा, गिद्धा तथा पुडाचोलम ढोलचोलम ने चीन के नृत्यप्रेमियों को भावविभोर कर दिया था। आधुनिक चीन में भारतीय नृत्य को लोकप्रिय बनाने में *पेइचिंग ओरियंटल सांग एण्ड डांस आसंबल स्पेयर टाइम स्कूल* की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस संस्थान की भारतीय नृत्य शिक्षिका सुश्री चाङ च्यून ने चीन के युवा समाज में भारतीय नृत्यों को पर्याप्त लोकप्रिय बनाया है। इन्हें भरत नाट्यम तथा कत्थक नृत्यों में अद्भुत महारथ हासिल है। श्रीमती च्यून पहली बार सन् १९५४ में भारत गई थीं

भारतीय नृत्य की शिक्षा उन्होंने श्री उदय शंकर से ली थी। सन् १९५७ में जब श्री उदयशंकर अपना दल लेकर चीन गए थे तब ये उनके दल के साथ रहने वाली चार चीनी नर्तकियों में से एक थीं। दूसरी बार सन् १९८० में एक वर्ष की छात्रवृत्ति पर भारत में उन्होंने भरतनाट्यम का प्रशिक्षण अहमदाबाद में मृणालिनी साराभाई से प्राप्त किया और कत्थक नृत्य की शिक्षा दिल्ली में प्रसिद्ध कत्थक नर्तक बिरजू महाराज से पाई थी। सन् १९८२ में ये तीसरी बार भारतीय छात्रवृत्ति पर भारत गई थीं। मई, १९९२ में जब भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री रामास्वामी वेंकटरमन चीन गए थे तब इनकी दो शिष्याओं ली मी वेन तथा चाव् श्याव् च्यून ने भारतीय नृत्यों का मनमोहक प्रदर्शन किया। श्री वेंकटरमन उस प्रदर्शन से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने उन दोनों बालिकाओं को मद्रास के प्रसिद्ध कलाकेन्द्र 'कलाक्षेत्र' में आने का निमंत्रण दिया। श्रीमती च्यून चौथी बार अपनी इन दो शिष्याओं के साथ तीन महीने के लिए भारत गई थीं।

श्रीमती चाङ च्यून ने अब तक भारतीय नृत्यों की अनेक प्रस्तुतियों की रचना एवम् प्रस्तुति की है जिनमें से प्रसिद्ध नाटककार महाकवि कालिदास कृत अभिज्ञान शाकुंतलम तथा प्रसिद्ध कत्थक नृत्यांगना उमराव जान अदा के जीवन से संबद्ध नृत्य रचनाएं उल्लेखनीय हैं।

समग्रतः चीनी समाज में भारतीय नृत्य डेढ़ हजार वर्षों से लोकप्रिय रहे हैं और यह लोकप्रियता आज भी अक्षुण्ण है।

प्रो. ओम्प्रकाश सिंहल,
पेइचिंग विश्वविद्यालय, पेइचिंग,
चीन

हमारे संस्कार

हम सभी जानते हैं कि प्रकृति के नियम के अनुसार प्रत्येक वस्तु परिवर्तनशील है इसी तरह, मानव शिशु भी लगातार बढ़ता और बदलता रहता है बालक के विकास को हम दो तरह से देख सकते हैं – (१) शरीर का विकास, (२) मन का विकास।

वास्तव में शरीर और मन या बुद्धि का विकास मिलकर ही वास्तविक विकास कहलाता है सदा बच्चे का सर्वांगीण विकास चाहा जाता है भारत देश में व्यक्तित्व के सभी अंगों के विकास के लिए 'संस्कार' की योजना प्राचीन काल से ही प्रचलित है। शरीर को स्वस्थ और सुन्दर, मन को प्रसन्न तथा बुद्धि को तीव्र बनाने के लिए इन संस्कारों का बड़ा महत्व है।

'संस्कार' का अर्थ है–शुद्धि। जो वस्तु जैसी है, उसे वैसी ही न रखकर उसे को अधिक से अधिक गुणों से युक्त बनाना 'संस्कार' कहलाता है संस्कार द्वारा दोषों को दूर किया जाता है और गुणों को डाला जाता है। जैसे पीतल के बरतन या सोने के आभूषण संस्कार द्वारा अपने सुन्दर रूप को पाते है। वैसे ही मनुष्य भी संस्कार से गुणों से युक्त और दोषों से मुक्त होता है।

भारतीय संस्कृति में सोलह संस्कार किए जाते हैं। गर्भाधान, पुंसवन, सीमान्तोन्नयन नामक तीन संस्कार शिशु के जन्म से पहले किए जाते हैं

जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णभेद नामक छह संस्कार–बालकाल में किए जाते हैं।

उपनयन, वेदाध्ययन, समावर्तन नामक तीन संस्कार शिक्षाकाल से जुड़े हैं। विवाह, वानप्रस्थ और सन्यास नाम से तीन संस्कार तीन आश्रमों में प्रवेश से पहले किए जाते हैं अन्तिम संस्कार मृत शरीर का किया जाता है जिसे 'अंत्येष्टि' कहते हैं।

गर्भाधान से कर्णभेद तक के नौ संस्कार माता पिता करते हैं, जिससे बच्चे का पूरा विकास होता है। शिक्षा प्राप्ति के संस्कार गुरु के दायित्व हैं। अंत्येष्टि संस्कार पुत्र करता है।

सभी संस्कारों के नाम से उनका स्वरूप पता लगता है इन सबका अपना–अपना महत्व है। इन संस्कारों का आयोजन सब उमंग–उत्साह से करते हैं साथ ही ये हम सबको जीवन के उदात्त मूल्यों के स्मरण का अवसर भी देते हैं

- डॉ. शशि तिवारी,
नई दिल्ली

सोने के अण्डे

सुनो कहानी

रायपुर नामक गाँव में एक गरीब किसान रहता था । उसके पास एक छोटा सा खेत था। एक दिन काम करते समय उसने देखा कि ज़मीन पर कोई चमकदार चीज़ पड़ी है। उसने हैरान होकर उसे उठाया और चिल्लाया, "यह तो सोने का अण्डा है।"

किसान उसे घर ले आया और अपनी पत्नी को दिखाया। उसे देखते ही पत्नी चिल्लायी, "हमारे दुख के दिन फिर गए। अब हमें कभी काम नहीं करना पड़ेगा।"

किसान कुछ सोचकर बोला, "अभी इतना शोर मचाने की ज़रुरत नहीं। पहले तो यह पता लगाना होगा कि यह अण्डा किस मुर्गी ने दिया है।"

अगले दिन काफ़ी ढूँढने के बाद उन्हें उस मुर्गी का पता चला। उन्होंने उस मुर्गी के लिए एक अलग बाड़ा बनवाया। अब वह मुर्गी रोज़ एक सोने का अण्डा देती और इस प्रकार वह किसान धीरे–धीरे अमीर होने लगा। जैसे–जैसे उनके पास दौलत आने लगी उनके मन का लालच बढ़ने लगा। एक दिन उसकी पत्नी बोली कि यह मुर्गी रोज़ सिर्फ़ एक अण्डा देती है। मुझे लगता है कि इसके पेट में सोने का भण्डार है। क्यों न हम इसे मार दें तो हमें एक बार में ही सारा सोना मिल जाएगा।

किसान को भी उसकी बात सही लगी और उसने उस मुर्गी को मार दिया । लेकिन उसके अन्दर उन्हें कुछ भी नहीं मिला। लालच करने के कारण उन्हें कुछ भी नहीं मिला। इसीलिए कहते हैं कि लालच बुरी बला है।

- प्राची

देखो हँस न देना

१. एक आदमी ने अपने डाक्टर मित्र से पूछा: मैं अपने तीसरे बेटे का क्या नाम रखूं ? डाक्टर मित्र ने पूछा: तुम्हारे पहले दो बेटों के क्या नाम हैं? आदमी ने उत्तर दिया: निरंजन और चितरंजन

डॉक्टर ने कहा: तो तीसरे का अमृतांजन रख दो।

२. सीमा व उसके पति के बीच नोकझोंक चल रही थी। सीमा ने नायके जाने की धमकी दी तो पति बोले," मैं शाम को दफ्तर से सीधा ससुराल चला जाऊँगा।" सीमा उस समय बहुत गुस्से में थी, पति की बात समझ नहीं पाई , तुरंत बोली ," मैं और आप दोनों चले जाएंगे तो बेटे सागर का क्या होगा ? " ध्यान से सुन रहे उनके बेटे ने कहा ," माँ तुम मेरी चिन्ता मत करो। मैं स्कूल के बाद ननिहाल चला जाऊँगा।"

३. नहीं पढ़ूँगा–नहीं पढ़ूँगा
ला दो चाहे ढेर मिठाई
पहले मुझे बताओ पापा
किसने की थी शुरू पढ़ाई ।

-मानस

জাপান ভারতী - নিতান্তই সদ্যোজাত শিশু। জাপানবাসী বাঙালীদের অনেকের কাছেই হয়তো এখনও এর খবরই পৌঁছায়নি। অনভিজ্ঞতার দরুন প্রথম দুটি সংখ্যার ভুলভ্রান্তির জন্যে আমরা ক্ষমাপ্রার্থী। তৃতীয় সংখ্যা থেকে ভুলভ্রান্তি দূর করার যথাসম্ভব চেষ্টা করা হয়েছে।

উৎসাহী বন্ধুদের কাছ থেকে, সর্বভারতীয় প্রাদেশিক ভাষায়, জাপান থেকে পত্রিকা প্রকাশে সাহায্যের অনুরোধ যখন আসে, তখন সম্মতিদানে এতটুকু দ্বিধা হয়নি। যদিও জানি, জাপানে দৈনন্দিন জীবনের দ্রুত তালে তাল মিলিয়ে বাড়তি সময় খুঁজে বার করা নিতান্তই দুঃসাহসিক প্রচেষ্টা, তবুও কিছুটা মনের খোরাক পাওয়ার জন্য নাহয় করাই গেল সেই দুঃসাহস।

বলা বাহুল্য এরকম কোনো কাজ সকলের সহযোগিতা ছাড়া সম্ভব নয়। তাই আমাদের একান্ত অনুরোধ, আপনারা সকলে এই প্রচেষ্টার সামিল হোন। জাপান ভারতীর জন্য আপনার পছন্দমত বিষয়ের উপর লেখা পাঠান, নীচের ঠিকানায়। পত্রিকাটির মান উন্নয়নের জন্যে আপনাদের সুচিন্তিত অভিমত জানতেও আমরা বিশেষ আগ্রহী।

এযাবৎ প্রতি সংখ্যায় একটি বা দুটি লেখার বেশি ছাপানো সম্ভব হয় নি। আনন্দের বিষয়, কবিতা এবং প্রবন্ধের মধ্যে সীমিত বাংলা বিভাগটি, এই সংখ্যায় সম্প্রসারিত করা হোল। আশা করি নতুন সংযোজনটি সকলেরই পছন্দ হবে। ভোজনবিলাসী হিসাবে বাঙালীর খ্যাতি সর্বজনবিদিত। তাই মুখরোচক খাবারের আলোচনাও বাঙালীর প্রিয়। এই সংখ্যায়, তেমনই একটি মুখরোচক খাবারের কথা জানিয়েছেন শ্রীমতী রীতা কর, যাঁর হাতের সুস্বাদু খাবারের গুণগ্রাহী তোকিও শহরে অনেক।

অবিলম্বে এমনই আরও অনেক নতুন জনপ্রিয় বিষয় সংযোজন করে পত্রিকাটিকে সর্বাঙ্গসুন্দর করে তুলবার জন্য সকলের কাছে সনির্বন্ধ অনুরোধ, পছন্দমতো বিষয়ে আপনাদের লেখা জাপান ভারতীতে পাঠান।

লেখা পাঠানোর ঠিকানা : রঞ্জন গুপ্ত ৫-৩-১০-১৪০১,ইয়াশিও, শিনাগাওয়া, তোকিও- ১৪০

ঠিকানা

শুধায় যবে সবাই মোরে,
কোন পাড়াতে বাস
বলি আমি, এইতো আছি,
সবারই আশপাশ।
কক্ষণো তো চাইনি আমি,
বিশেষ একটি পাড়া
আসল বাসা আছে যখন,
মনের মধ্যে বহু।

-করবী মুখোপাধ্যায়
তোকিও

কি লিখি

- আনন্দ

অনুরোধ এসেছে জাপান ভারতীর জন্য কিছু লিখি, এবং পারলে নিয়মিত। কিন্তু কি লিখি? গুরুগম্ভীর প্রবন্ধ? নৈব নৈব চ। কারণ আম জনতার তা না পসন্দ। তাহলে কবিতা?

পত্রিকার গত সংখ্যায় দেখলাম সুকুমার রায়ের অনুসরণে কল্যাণ দাশগুপ্ত মহাশয় একটা মজাদার কবিতা লিখেছেন। কল্যাণবাবুকে অনুসরণ করে আমিও একটা চমৎকার কবিতা লিখে ফেলব এমন সাধ থাকলেও সাধ্য নেই। এ প্রসঙ্গে গল্প হলেও একটা সত্যি ঘটনা মনে পড়ছে।

একটি উঠতি বয়সের গাঁয়ের ছেলে - পরবর্তী যুগে প্রখ্যাত ঔপন্যাসিক - রাত জেগে লন্ঠনের আলোয় পরীক্ষার পড়া করছিল। হঠাৎ জানালা দিয়ে তার নজর চলে গেল জ্যোৎস্না ধোওয়া দিগন্ত বিস্তৃত প্রান্তরের দিকে। সেই অনৈসর্গিক দৃশ্য তাকে আনমনা করে তুলল। ইতিহাস মুখস্থ বন্ধ হয়ে গেল। সে হঠাৎ খাতা টেনে কবিতা লিখতে শুরু করলো। প্রথম লাইনটা বেশ তরতরিয়ে লেখা হয়ে গেল

চাঁদের আলোক হেরিয়া আমার নাচিয়া উঠিছে প্রাণ

দ্বিতীয় লাইনটা মেলাতে গিয়ে হল বিপত্তি। কিছুতেই উপযুক্ত লাইন আর মাথায় আসছেনা। মিলনান্ত করতে গিয়ে প্রাণান্ত আর কি! সেই ব্যর্থ চেষ্টায় সে খন ঘুমিয়ে পড়ছে জানে না। হঠাৎ কার পদশব্দে তার ঘুম গেল ভেঙ্গে। সে চমকে উঠে দেখে, তার রাশভারি জ্যাঠামশায় তার পড়ার ঘর থেকে বেড়িয়ে যাচ্ছেন। সে ভয় পেয়ে ঘুম জড়ানো চোখে আবার সশব্দে ইতিহাস পড়া শুরু করে দিল। পড়তে পড়তে হঠাৎ তার চোখ গেল সেই খাতার দিকে। চোখ পড়তেই সে অবাক হয়ে দেখল তার কবিতার অসমাপ্ত দ্বিতীয় লাইনটা সমাপ্ত করে দেওয়া হয়েছে। জ্যাঠামশাই -ই করে দিয়েছেন। জ্যাঠামশাই লিখে দিয়েছেন

নাচন থামিয়ে পড় ইতিহাস নহিলে ছিঁড়িব কান

এরপর সেই ছেলেটি আর কখনও কবিতা লেখার চেষ্টা করেনি। .....

.....তাহলে গল্প লিখলে কেমন হয়? ছেলে থেকে বুড়ো গল্প পছন্দ করে না কে? তবে আমাদের গল্প কোন রহস্য কাহিনী বা কল্প বিজ্ঞানের গল্প নয়। সে গল্পের নায়ক ঘনাদা, টেনিদা বা ফেলুদারাও কেউ নন। এ গল্পের ট্রিনিটি হলেন রামকৃষ্ণ-বিবেকানন্দ-সারদা। তাঁদের নিয়ে গল্প, তাঁদের বলা গল্প। এ গল্পের স্বাদ একটু ভিন্নজাতের হলেও তা কম মজার নয়। আর সেই মজা কেবল মুহূর্তের নয়, অনন্তের। সে কেবল আনন্দ দেয় না, সে উত্তরণও ঘটায়।

জাপান ভারতীর পাতায় সেই সব গল্প পরিবেশনের প্রস্তাব রেখে আজ এখানেই ইতি। পাঠকেরা কি বলেন?

-আনন্দ

হেঁসেল থেকে

আমাদের সকলের প্রবাসী জীবনে পাঁউরুটির স্থান অদ্বিতীয়। বিদেশের মাটীতে পা দিয়ে যখন সব খাবারই অচেনা লাগে, তখন দোকানে গিয়ে পাঁউরুটি দেখে মনে হয় - এই তো আমাদের সেই চিরপরিচিত বন্ধু। এমন বন্ধু মেলা সত্যিই ভার। সকালে ব্রেকফাস্টে টোস্ট, দুপুরে লান্চে স্যান্ডউইচ, বাচ্চারা বিকেলে স্কুল থেকে ফেরার পরও মুখরোচক রুটি, মায় হঠাৎ এসে পড়া অতিথি আপ্যায়ণেও মুশকিলআসান সেই রুটি।

পাঁউরুটি দিয়ে অতিথি আপ্যয়ণ - সেও আবার হয় না কি? হ্যাঁ, নোনতা, টক, মিষ্টি অনেক রকমের সুস্বাদু পদই তৈরী করা যায় এই পাঁউরুটি দিয়ে, যেমন পাঁউরুটির দইবড়া। এর উপকরণ অতি সহজলভ্য, করতেও সহজ, এবং সর্বোপরি অত্যন্ত উপাদেয়।

উপকরণঃ

৮ স্লাইস পাঁউরুটি, ২৫০ গ্রাম দই, ভাজার জন্য তেল, এবং চায়ের চামচের এক চামচ করে আদা কুচো, লঙ্কার গুঁড়ো, জিরে ভাজার গুঁড়ো, ও আন্দাজ মতন নুন। এছাড়া লাগবে তেঁতুলের চাটনী, ও ধনেপাতার কুচো।

প্রস্তুত প্রণালীঃ

পাঁউরুটি দুমিনিট জলে ভিজিয়ে রেখে নিঙড়ে জল বার করে নিয়ে নুন, লঙ্কা আদাকুচো দিয়ে মেখে নিন। এই মিশ্রণটি থেকে গোল গোল বলের মতন গড়ে হাত দিয়ে চেপে দিন। এইবার দইয়ের সাথে নুন ও জিরেভাজার গুঁড়ো দিয়ে ফেটিয়ে রাখুন। পাঁউরুটি গোল গুলি ছাঁকা তেলে ভেজে নিন ও ফেটানো দইতে ফেলুন। ঠান্ডা হলে ওপরে তেঁতু লের চাটনী ও ধনেপাতার কুচো দিয়ে পরিবেশন করুন।

- রীতা কর
৪-১৪-৮ হিগিরিয়ামা, কোনান-কু
য়োকোহামা ২৩৩, জাপান

প্রগতি

জাপান মানে সূর্যোদয়
জাপান মানে ইকেবানা
ফুজিয়ামা শান্ত এখন
সেথায় যেতে নেইকো মানা।
জাপান মানে ভূমিকম্প
জাপান মানে কুরোসাওয়া
ভূমিকম্পে দুলছে বাড়ী
সবই এখন গা সওয়া।
জাপান মানে কারাতে
জাপান মানে বনসাই
আতিথেয়তায় সেরা সে দেশ
সবার ভেতর দেখতে পাই।
জাপান মানে হিরোশিমা
জাপান মানে নাগাসাকি
কিন্তু সে সব অতীত এখন
মনে সে সব নাই বা রাখি।
জাপান মানে সারিন নয়
জাপান মানে প্রগতি
মারণ যজ্ঞ বন্ধ হোক
বন্ধু দেশের এই মিনতি।।

-অরুণ গুপ্ত
এম-৩/২, রিজেন্ট এস্টেট
কলকাতা- ৭০০০৯২